Shodhaamrit, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : Page No.-41-48

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 41-48
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

सोहन लाल
सहायक आचार्य,
अम्बिका पी जी महाविद्यालय, पल्लू.

Corresponding Author :

सोहन लाल
सहायक आचार्य,
अम्बिका पी जी महाविद्यालय, पल्लू.

औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति का उदय : महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों का ऐतिहासिक विश्लेषण

सारांश : औपनिवेशिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित रचनात्मक कार्यक्रमों ने राजनीति को एक नयी दिशा प्रदान की। गांधी ने सत्य और अहिंसा के माध्यम से पूर्ण स्वराज प्राप्त करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को एक सृजनात्मक राजनीतिक उपकरण के रूप में विकसित किया। इन कार्यक्रमों में सामाजिक एकता, अस्पृश्यता उन्मूलन, खादी व ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, नशाबंदी सहित कुल 18 सूत्री कार्ययोजना शामिल थी, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज का सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण करना था (शर्मा, 2022)। यह शोध-पत्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है कि गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम किस प्रकार औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति के उदय का आधार बने। गांधी के अनुसार रचनात्मक कार्यक्रम "पूर्ण स्वराज या मुकम्मिल आज़ादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता" था (गांधी, 1945)। इन कार्यक्रमों ने एक ओर भारतीय जनता में राष्ट्रवादी चेतना, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक जागृति पैदा की, तो दूसरी ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देने के लिए एक स्थायी और व्यापक जनाधार तैयार किया (चंद्रा, 2008)। निष्कर्षतः, गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को केवल प्रतिरोध की राजनीति से आगे बढ़ाकर रचनात्मक राजनीति की एक नई दिशा दी, जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ-साथ भविष्य के भारत के निर्माण की नींव रखी (देसाई, 2011)।

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी, रचनात्मक कार्यक्रम, रचनात्मक राजनीति, औपनिवेशिक भारत, स्वतंत्रता आंदोलन, सत्याग्रह, पूर्ण स्वराज ।

1. परिचय : बीसवीं सदी के प्रारंभ में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मुख्यतः याचिकाओं, विरोध प्रदर्शनों और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ असहयोग एवं सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलनों तक सीमित था। महात्मा गांधी के 1915 में भारत आगमन के बाद राष्ट्रीय आंदोलन की रणनीति में एक मौलिक परिवर्तन आया। गांधी ने प्रतिरोध के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों पर ज़ोर दिया, जिससे राजनीति का दायरा

केवल सत्ता-प्रतिरोध तक सीमित न रहकर राष्ट्र-निर्माण की ओर विस्तृत हुआ (देसाई, 2011)। गांधी का मानना था कि भारत को आज़ादी केवल राजनीतिक शक्तियों को चुनौती देकर नहीं, बल्कि जनसामान्य की चेतना एवं समाज के आधारभूत पुनर्गठन के द्वारा मिलेगी। **हिन्द स्वराज** (1909) में ही गांधी ने सच्चे स्वराज की नींव स्व-शासन, आत्मसंयम और भारतीयों की आत्मनिर्भरता में देखी थी, न कि केवल ब्रिटिशों की जगह भारतीय शासकों के आने में (गांधी, 1909)। इसी सिद्धांत को व्यवहार में लाने के लिए गांधी ने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम चलाये, जो उस दौर में "आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने के वास्तव में उपकरण थे" (मैथ्यू, 2021)। इन कार्यक्रमों ने औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति के उदय को चिन्हित किया – ऐसी राजनीति जो रचनात्मक कार्यों द्वारा जनता की शक्ति जागृत कर शासन की नींव हिला सकती थी (शर्मा, 2022)। इस शोध पत्र में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की ऐतिहासिक पड़ताल करते हुए यह विश्लेषित किया गया है कि कैसे इन कार्यक्रमों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक, सृजनात्मक एवं जनआधारित राजनीतिक दिशा प्रदान की।

2. रचनात्मक कार्यक्रम की अवधारणा और उद्देश्य : महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यक्रम का अभिप्राय उन रचनात्मक गतिविधियों से था जो जनसामान्य में अहिंसक शक्ति को जागृत करें और स्वराज की स्थापना के लिए समाज को भीतर से सशक्त बनाएं (देसाई, 2011)। गांधी ने स्वयं कहा था कि रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज के निर्माण का सत्य और अहिंसापूर्ण मार्ग है (गांधी, 1945)। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यदि भारत की चालीस करोड़ जनता पूरी तरह इन रचनात्मक कार्यों में लग जाए, तो "स्वराज हेतु असहयोग या सविनय अवज्ञा जैसे सत्याग्रहों की जरूरत ही नहीं पड़ेगी – देश अपने आप स्वतंत्र हो जाएगा" (गांधी, 1945; देसाई, 2011)। इस प्रकार गांधी ने क्रांतिकारी बदलाव को दो पहलुओं में परिभाषित किया: एक ओर अन्यायपूर्ण, शोषक व्यवस्था का विरोध (ऋणात्मक पहलू) और दूसरी ओर एक नई नैतिक व आत्मनिर्भर समाज-व्यवस्था का निर्माण (धनात्मक पहलू) जिसे वे अहिंसक समाज कहते थे (देसाई, 2011)। रचनात्मक कार्यक्रम इस धनात्मक क्रांति का मार्ग था, जिसमें जनता की भागीदारी से नए सामाजिक ढांचे का निर्माण होना था। गांधी के अनुसार सत्याग्रह का फल तभी स्थायी हो सकता है जब समानांतर रूप से रचनात्मक कार्य द्वारा जनता आत्मशक्ति अर्जित करे (बरूअर्स, 1995)। रोबर्ट बरूअर्स ने गांधी की रणनीति का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि गांधी के लिए अहिंसा मात्र विरोध की तकनीक भर नहीं थी, बल्कि "यह सामाजिक न्याय, आर्थिक स्वावलंबन और आत्म-साक्षात्कार की व्यापक संघर्ष-प्रक्रिया से जुड़ी थी" (बरूअर्स, 1995) – और रचनात्मक कार्यक्रम इसी व्यापक संघर्ष का आधार स्तंभ था। गांधी ने व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन को साथ लेकर चलने पर बल दिया: व्यक्तिगत स्तर पर आत्मशुद्धि व सेवाभाव, और सामुदायिक स्तर पर रचनात्मक कार्यों द्वारा नई आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं का निर्माण (शीहान, 2014)। कुल मिलाकर, रचनात्मक कार्यक्रम का उद्देश्य केवल अंग्रेज़ी हुकूमत से आज़ादी पाना नहीं था, बल्कि भारत के राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए एक समग्र कार्यक्रम तैयार करना था ताकि स्वराज मिलने के बाद देश आत्मनिर्भर, न्यायसंगत और सशक्त राष्ट्र के रूप में खड़ा हो सके (शर्मा, 2022)। गांधीजी ने स्पष्ट किया था कि "यह कार्यक्रम आज़ादी प्राप्त करने के साथ-साथ आज़ादी को बनाए रखने की योजना" भी है (शर्मा, 2022)।

3. रचनात्मक कार्यक्रम के प्रमुख घटक : गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत उन विभिन्न क्षेत्रों में सुधार व निर्माणात्मक कार्य शामिल थे, जिन्हें वे स्वराज की नींव के लिए अनिवार्य मानते थे। प्रारम्भ में 13 बिंदुओं के रूप में प्रस्तावित इन कार्यक्रमों में बाद में विस्तार कर कुल 18 प्रमुख मदों को सम्मिलित किया गया (शर्मा, 2022)। ये घटक इस प्रकार थे: (1) साम्प्रदायिक एकता – विभिन्न धर्मों व समुदायों (हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई) के बीच सौहार्द स्थापित करना; (2) अस्पृश्यता निवारण – अछूत कहे जाने वाले हरिजनों/आदिवासियों के उत्थान व सामाजिक समता हेतु प्रयास; (3) नशाबंदी – शराब व मादक द्रव्यों के सेवन पर रोक; (4) खादी और चरखा

प्रोत्साहन; (5) ग्रामोद्योग तथा स्वदेशी उद्योगों का विकास; (6) ग्राम सुधार व स्वच्छता; (7) बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) – कार्य आधारित व नैतिक शिक्षा का प्रसार; (8) प्रौढ़ शिक्षा – वयस्कों में साक्षरता; (9) स्त्री-शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण; (10) स्वास्थ्य एवं ग्रामीण सफाई; (11) गो-सेवा व पशुपालन सुधार; (12) आदिवासी उत्थान; (13) राष्ट्रीय भाषा का प्रसार (हिन्दुस्तानी भाषा हेतु); (14) प्रांतीय भाषाओं का विकास; (15) आर्थिक समानता; (16) श्रमिकों के अधिकार व जागृति; (17) किसान (कृषक) कल्याण; और (18) सेवाभाव (असहाय, वृद्ध व कुष्ठ रोगियों की सेवा) (सिंह, 2022; शर्मा, 2022)। इन कार्यक्रमों की सूची को गांधी ने कभी अंतिम नहीं माना – उन्होंने लिखा, "मेरी यह सूची पूर्ण होने का दावा नहीं करती; आवश्यकतानुसार इसमें नए कार्य जोड़े जा सकते हैं" (गांधी, 1945; सिंह, 2022)। इसका तात्पर्य था कि रचनात्मक कार्यक्रम एक लचीला ढांचा था जो समय व परिस्थिति के अनुसार बढ़ता रहने वाला जीवंत कार्यक्रम था (देसाई, 2011)।

उपरोक्त घटकों का मूल ध्येय भारतीय समाज की उन कमजोर कड़ियों को मज़बूत बनाना था जिनका लाभ ब्रिटिश सत्ता उठाती थी। **साम्प्रदायिक एकता** और **अस्पृश्यता निवारण** द्वारा गांधी ने समाज में व्याप्त विभाजनों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। वे जानते थे कि हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य और जातीय छुआछूत अंग्रेज़ों की "फूट डालो और राज करो" नीति को आसान बनाते थे; अतः इन विभेदों पर प्रहार करना स्वराज की बुनियाद के लिए आवश्यक था (मैथ्यू, 2021)। गांधी के नेतृत्व में 1920 के दशक में असहयोग आंदोलन के दौरान हिंदू-मुस्लिम एकता का अद्भुत वातावरण बना, ख़िलाफ़त आंदोलन में एकजुटता दिखाई गई, और अस्पृश्यता के खिलाफ स्वयं गांधी ने 1932-33 में देशव्यापी हरिजन यात्राएँ कीं। उन्होंने हरिजनों को मंदिर-प्रवेश दिलाने, कुओं से पानी लेने जैसे अभियानों का नेतृत्व किया (नंदा, 1958)। **खादी एवं चरखा** गांधी के आर्थिक स्वराज के प्रतीक थे। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के बदले गांधी ने चरखे पर सूत कातकर हाथ से बुने कपड़े खादी के उपयोग को स्वदेशी आंदोलन का केंद्र बनाया। गांधी ने खादी को "भारत की जनता की एकता, आर्थिक स्वतंत्रता और समानता का प्रतीक" कहा (गांधी, 1921 शर्मा के अनुसार उद्धृत, 2022)। उनके अनुसार चरखा ऐसा साधन था जो हर गरीब से गरीब व्यक्ति को रोज़गार और आत्मसम्मान दे सकता था। उन्होंने लिखा, "चरखा एक ऐसी सामान्य वस्तु है जो प्रत्येक गाँव में बन सकती है... जब भारत में तीस लाख चरखे चलने लगेंगे तभी स्वराज्यवादियों को शांति मिलेगी" (गांधी, 1925 शर्मा के अनुसार उद्धृत, 2022)। खादी आंदोलन से करोड़ों भारतीय जुड़ गए – महिलाओं से लेकर किसानों तक – जिसने न केवल ब्रिटिश कपड़ा उद्योग को आर्थिक चुनौती दी बल्कि भारतीयों में स्वाभिमान और एकता की भावना भरी (चंद्रा, 2008)। **ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योग** पर बल देकर गांधी ने केंद्रित औद्योगिक अर्थव्यवस्था के विरुद्ध ग्राम-आधारित स्वावलंबी अर्थव्यवस्था का समर्थन किया। उनका विचार था कि केन्द्रीयकृत उद्योग और शहरीकरण ने ग्रामीण गरीबी बढ़ाई; स्वराज हेतु ग्रामीण लोगों को अपने स्थानीय उद्योगों (कताई-बुनाई, तेल घानी, चमड़े, कुम्हार आदि) में समर्थ बनाना होगा (शर्मा, 2022)। **बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)** में गांधी ने किताब-केन्द्रित शिक्षा के बजाय कार्य-आधारित, शारीरिक श्रम व आजीविका से जुड़ी शिक्षा पर ज़ोर दिया, जिससे शिक्षा समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और हाथ-कौशल का आदर बढ़े (गांधी, 1937)। **स्वास्थ्य एवं स्वच्छता** के क्षेत्र में गांधी ने गांवों की सफाई, शौचालय व्यवस्था, पेयजल आदि की तरफ़ ध्यान खींचा। स्वयं प्लेग महामारी के दौरान दक्षिण अफ्रीका (1904) और बाद में भारत में (सूरत, 1917) उन्होंने सफाई अभियानों में अग्रणी भूमिका निभाई थी (देसाई, 2011)। वे कहते थे कि सफाई जैसे कार्यों में छुआछूत मान्यताओं को तोड़कर सभी को जुटना चाहिए – "गाँव की सफाई हिंदुओं के लिए सामाजिक पूर्जा थी जो पुरानी जातीय रूढ़ियों को चुनौती देती थी" (शीहान, 2014)। **स्त्री उत्थान** गांधी के कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा था – उन्होंने महिलाओं को चरखा आंदोलन, सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यों में समान रूप से भागीदार बनाया, जिससे महिलाओं की स्थिति व आत्मविश्वास में वृद्धि हुई (मैथ्यू, 2021)। **नशाबंदी** द्वारा न केवल नैतिक सुधार अपितु आर्थिक सुधार (गरीब परिवारों की आय शराब में न व्यय हो) भी लक्षित था। कुल

मिलाकर, इन सभी पहलों का आपसी जुड़ाव एक ऐसे संपूर्ण राष्ट्रनिर्माण कार्यक्रम में था जो भारत को औपनिवेशिक निर्भरता से मुक्त कर आत्मनिर्भरता, समानता और नैतिकता के मार्ग पर अग्रसर करे।

इन कार्यक्रमों की विशेषता थी कि इन्हें जनता की सक्रिय भागीदारी से संचालित किया जाना था। गांधी ने ज़ोर देकर कहा था कि रचनात्मक कार्य वही सार्थक है जिससे लोकशक्ति खड़ी हो – अर्थात जो कार्य जनता में अपनी शक्ति का अहसास जगाए (देसाई, 2011)। उदाहरणस्वरूप, प्रख्यात उपन्यास **"कँथापुर"** (1938) में राजा राव दर्शाते हैं कि कैसे एक छोटे से गाँव में गांधी-समर्थक कार्यकर्ता मुफ्त चरखे बांटकर गरीब किसानों और दलितों को स्वावलंबन से जोड़ता है। गाँव के अछूत लोग जब पहली बार चरखा पाकर सूत कातने लगते हैं तो "वे लोग चरखे काँधे पर उठाए कानों तक प्रसन्न मुस्कान लिए अपने घर लौटते हैं... उन्हें विश्वास हो चला था कि अब अपने हाथों से कपड़ा बनाकर पहन सकेंगे – और यह सब महात्मा के कारण संभव हुआ" (राव, 1938)। इस साहित्यिक उदाहरण से वास्तविकता झलकती है कि गांधी के आह्वान पर चरखे जैसे सरल उपकरण ने लाखों ग्रामीणों को आंदोलन से जोड़ दिया था। स्त्री-पुरुष, सवर्ण-दलित सभी चरखा संघों, प्रार्थना सभाओं और खादी केंद्रों में साथ आने लगे। रचनात्मक कार्यक्रमों ने जनसाधारण में आंतरिक चेतना पैदा की, उन्हें उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराया और स्वराज के लिए संघर्ष का सहभागी बनाया (शर्मा, 2022)। यह जनता में सेवा भावना और त्याग के गुण भी विकसित करने का माध्यम था। स्वयं गांधी ने स्पष्ट कहा, "कातना (चरखा) मूलतः शिक्षा है, क्योंकि इससे हमारे भीतर सेवा-धर्म जागता है, हम एक उपयोगी कौशल सीखते हैं, और उसमें सुंदर कला भी है" (गांधी, 1932)। इस प्रकार, गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम बहुआयामी थे – उन्होंने भारतीय समाज के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उद्धार को स्वतंत्रता आंदोलन के लक्ष्य से अभिन्न रूप से जोड़ दिया।

4. राष्ट्रीय आंदोलन में रचनात्मक राजनीति की भूमिका : गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति की नींव रखी, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को एक नयी रणनीतिक दिशा दी। 1920 के **असहयोग आंदोलन** के समय से ही गांधी ने प्रतिरोध (जैसे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शासन का असहयोग) को रचनात्मक कार्यों के साथ जोड़ा। असहयोग आंदोलन के प्रस्तावों में स्वदेशी शिक्षण संस्थान खोलना, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, न्यायालयों का बहिष्कार कर पंचायती अदालतें बनाना, और खादी-कताई को बढ़ावा देना शामिल थे (नंदा, 1958)। लाखों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़ राष्ट्रवादी विद्यालयों में प्रवेश लिया; जगह-जगह राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाएँ और चरखे के केंद्र स्थापित हुए (मैथ्यू, 2021)। इन रचनात्मक गतिविधियों ने आंदोलन को गाँव-गाँव तक पहुंचा दिया। जब असहयोग आंदोलन 1922 में अचानक स्थगित हुआ, तब कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सामने चुनौती थी कि जनउत्साह को कैसे बनाए रखें। गांधी ने तब समूचे देश में चरखा संघों, खादी प्रचार, हिंदू-मुस्लिम एकता सभाओं, हरिजन सेवा जैसे कार्यों को तेज़ करने का आह्वान किया। उन्होंने 1922 में एक नोट में लिखा, "स्वतंत्रता की भावना सर्वव्यापी है। आंदोलन को स्थायित्व देने वाला रचनात्मक कार्य सीधे दिखेगा नहीं, पर हज़ारों घरों में निश्चल रूप से जारी कार्य में इसे देखा जा सकता है... इसे स्वदेशी और चरखे में देखा जा सकता है। भारत उतना ही स्थायी रूप से संगठित होगा जितना कि हाथ-कताई संगठित होगी" (गांधी, 1922)। यह स्पष्ट संकेत था कि गांधी स्थायी संगठन और स्वराज की नींव जन-जन के बीच हो रहे छोटे-छोटे रचनात्मक कार्यों में देखते थे।

1930 के **नमक सत्याग्रह** और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी रचनात्मक कार्यक्रम साथ-साथ चलाए गए। सत्याग्रह के नाटकीय चरण के बाद 1934 में जब गांधी ने सक्रिय राजनीति से कुछ समय के लिए अलग होकर कांग्रेस के अंदरूनी विरोधों के चलते त्यागपत्र दिया, तब भी उन्होंने रचनात्मक कार्य को गति देना जारी रखा (गुहा, 2018)। 1934 से 1939 के बीच गांधी ने ग्रामोद्योग संघ, अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ, अखिल भारतीय बुनियादी शिक्षा संघ, तथा हरिजन सेवा संघ जैसे संगठनों के माध्यम से गांवों में रचनात्मक कार्यक्रमों का व्यापक प्रसार किया। इस अवधि को अक्सर कांग्रेस के "संविधानवादी दौर" (प्रांतीय सरकारें

चलाना) और आंदोलन के ठहराव का काल कहा जाता है, परंतु गांधीवादी कार्यकर्ताओं ने देश भर में सेवा कार्यों की एक शीत क्रांति जारी रखी। बिपिन चंद्र के विश्लेषणानुसार, "गांधीवादी रणनीति में रचनात्मक कार्य एक महत्वपूर्ण स्तंभ था। जब बड़े आंदोलन 'निष्क्रिय चरण' में होते थे, तब यह रचनात्मक कार्य उन खाली राजनीतिक स्थानों को भरता था जो आंदोलन की वापसी से पैदा होते थे" (चंद्रा, 2008)। वास्तव में 1934-35 के दौरान जब कांग्रेस के कई नेता संसदीय राजनीति या संगठनात्मक कार्यों में लगे थे, तब गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने जनता को सक्रिय व संगठित बनाए रखा। इसे गांधी ने "युद्ध विराम के दौरान चरित्र निर्माण" कहा – जैसे सेना युद्ध के बीच शांति काल में तैयारी करती है, वैसे ही सत्याग्रहियों को रचनात्मक काम के जरिए अगली लड़ाई के लिये तैयार रहना चाहिए (गांधी, 1945)। बिपिन चंद्र लिखते हैं कि रचनात्मक कार्य 'स्थितीय युद्ध' का हिस्सा था, जो लंबे संघर्ष में आधार बनाता है, ताकि जन-आंदोलन के विराम के समय भी जनचेतना ठंडी न पड़े (चंद्रा, 2008)।

रचनात्मक राजनीति की एक बड़ी सफलता यह थी कि इसने स्वतंत्रता आंदोलन को शहरी पढ़े-लिखे वर्ग से आगे बढ़ाकर ग्रामीण भारत की व्यापक जनसंख्या तक फैलाया। गांधी ने 1916 में ही महसूस किया था कि अंग्रेज़ी शिक्षित नेतागण और जनता के बीच भारी दूरी है – "जनता हमारे जैसे शिक्षित लोगों को उतना ही अपरिचित समझती है जितना अंग्रेज अफ़सरों को... प्रतिनिधि और प्रतिनिधित्वजन के बीच मेल नहीं है" (गांधी, 1916)। इस दूरी को पाटने के लिए गांधी ने स्वयं को व अपने सहयोगियों को गांव की जीवनधारा में उतारा। जगह-जगह आश्रमों की स्थापना की गई – साबरमती (गुजरात), वर्धा (महाराष्ट्र) और अन्य प्रदेशों में सैकड़ों छोटे-छोटे आश्रम एवं खादी केंद्र बने। ये आश्रम केवल आध्यात्मिक केंद्र नहीं, बल्कि ग्राम सेवा और रचनात्मक प्रशिक्षण के केंद्र थे, जहां खादी कताई, ग्रामोद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई आदि पर प्रयोग होते थे (चंद्रा, 2008)। बिपिन चंद्र के अनुसार, "रचनात्मक कार्य सैकड़ों आश्रमों के रूप में प्रतीकित हुआ, जो लगभग पूरी तरह गाँवों में स्थापित हुए। इनमें सामाजिक व राजनीतिक कार्यकर्ताओं को practically प्रशिक्षण मिला – सूत कातने, खादी बनाने और ग्रामीण जीवन से जुड़ने का" (चंद्रा, 2008)। इस प्रक्रिया ने दो महत्त्वपूर्ण कार्य किए: एक, कांग्रेस नेतृत्व और ग्रामीण जनों के बीच जीवंत संपर्क से जन आधार का अभूतपूर्व विस्तार हुआ; और दो, एक समर्पित कार्यकर्ता-वर्ग तैयार हुआ जो आंदोलन के हर उतार-चढ़ाव में सक्रिय रहा। गांधी ने रचनात्मक कार्यकर्ताओं को अपना "इस्पात-ढांचा" कहा जो संगठन को थामे रखते थे (चंद्रा, 2008)। असंख्य सत्याग्रहियों ने जेल यात्राएँ कीं, किंतु हर बार जेल से बाहर आने पर वे फिर गांवों में खादी, शिक्षा, सेवा के काम में जुट जाते थे – इस निरंतरता ने आंदोलन की लौ बुझने नहीं दी। जहाँ बड़े आंदोलनों में हिस्सा लेनेवालों की संख्या सीमित होती थी (जैसे नमक सत्याग्रह में प्रत्यक्ष दांडी मार्च में मुट्ठीभर लोग थे), वहीं रचनात्मक कार्यक्रम करोड़ों लोगों को देशसेवा के काम से जोड़ने में सक्षम थे (चंद्रा, 2008)। यह समावेशिता रचनात्मक राजनीति की सबसे बड़ी ताकत बनी। उदाहरणस्वरूप, हर कोई जेल नहीं जा सकता था, लेकिन "देश के लिए सूत कताई करना, खादी पहनना, गाँव की सेवा करना – ऐसा काम था जो प्रत्येक व्यक्ति कर सकता था"। इस प्रकार रचनात्मक कार्यक्रम ने हर इच्छुक भारतीय को स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय सदस्य बना दिया, चाहे वह प्रत्यक्ष विरोध प्रदर्शन में शामिल न हो पाए। 1930 के दशक में तमाम युवा जोश से भरे लोग थे जो हिंसक क्रांति या समाजवाद की ओर आकर्षित हो रहे थे; उनके लिए गांधी की "धीमी" रचनात्मक राजनीति कभी-कभी निराशाजनक थी (चंद्रा, 2008)। खुद जवाहरलाल नेहरू जैसे नेता प्रारंभ में गांधी के कार्यक्रमों की सीमा समझ नहीं पा रहे थे और अधिक तेज़ संघर्ष चाहते थे (नेहरू, 1941)। लेकिन गांधी डटे रहे क्योंकि उन्हें भारत की ज़मीनी हकीकत और जनता की नब्ज़ का गहरा ज्ञान था (मैथ्यू, 2021)। बाद में यह स्पष्ट हुआ कि जिन समाजवादी-क्रांतिकारी गुटों ने जनता से संपर्क नहीं बनाया, वे व्यापक असर नहीं छोड़ सके; जबकि गांधी की अहिंसक रचनात्मक सेना स्वतंत्रता आंदोलन की धारा में रची-बसी रही। स्वयं एक मार्क्सवादी क्रांतिकारी हो ची मिन्ह ने गांधी की इस रणनीति को सराहा था – उन्होंने कहा था, "आखिरी बात यह है कि हम और हमारे जैसे दूसरे क्रांतिकारी सब गांधी के शिष्य हैं" (देसाई, 2011)। हो ची मिन्ह मानते थे कि क्रांति केवल

सत्ता परिवर्तन या मध्यस्थों के बदलने से नहीं आती, बल्कि जनता को क्रांतिकारी बनाना पड़ता है (देसाई, 2011)। गांधी ने भारत में यही किया – अपने रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा जनता की अहिंसक लोकशक्ति जगाई, जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सबसे बड़ी ताकत बनी।

5. रचनात्मक राजनीति का उदय एवं प्रभाव : एक विश्लेषण : महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति की अवधारणा को जन्म दिया, जिसने पारंपरिक राजनीतिक संघर्ष को एक रचनात्मक आयाम प्रदान किया। यह उदय कई मायनों में अद्वितीय था। पहली बार राजनीतिक आंदोलन केवल सत्ता विरोध तक सीमित न रहकर राष्ट्र के पुनर्निर्माण के आंदोलन में परिवर्तित हुआ (शर्मा, 2022)। गांधी के लिए स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय का आत्मोद्धार था – आर्थिक, सामाजिक, नैतिक उत्थान था। रचनात्मक राजनीति इसी सिद्धांत की वास्तव में अभिव्यक्ति थी। इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को लंबी अवधी तक चलने वाली जन-अभियान का रूप दिया, जिसमें प्रतिरोध और निर्माण दोनों समानांतर चल रहे थे (मैथ्यू, 2021)। इतिहासकार मानते हैं कि गांधी की द्वि-आयामी रणनीति – सत्याग्रह और रचनात्मक कार्य – ने ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को दुनिया के अन्य आंदोलनों से अलग एक जन-जागरण का रूप दिया (चंद्रा, 2008; बॉन्ड्यूरेंट, 1965)। रचनात्मक कार्यक्रमों के ज़रिए करोड़ों निरक्षर, ग्रामीण, हाशिए के लोग राजनीतिक प्रक्रिया के केंद्र में आए। राष्ट्रीय आंदोलन में आम जनता की भागीदारी इन्हीं कार्यक्रमों से सुनिश्चित हुई (शर्मा, 2022)। उदाहरण के तौर पर, खादी पहनना या चरखा कातना एक राजनीतिक कर्म बन गया था – बिहार, बंगाल से लेकर पंजाब और मद्रास तक लोग खादी को स्वतंत्रता का सूचक मान गर्व से धारण करते थे (नंदा, 1958)। इसी तरह, हरिजनोद्धार का कार्य हिंदू-मुस्लिम एकता की तरह आंदोलन का हिस्सा बना, जिससे सामाजिक सुधार और स्वाधीनता संघर्ष एक-दूसरे के पूरक हो गए। इस सृजनात्मक राजनीति ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नींव पर बहुआयामी प्रहार किए – आर्थिक रूप से स्वदेशी व बहिष्कार ने ब्रिटिश व्यापारिक हितों को चोट पहुंचाई; सामाजिक रूप से जनता में आत्मसम्मान व एकता बढ़ाकर "नैतिक सत्ता" का निर्माण किया गया; और राजनीतिक रूप से हर गांव में स्वराज का माहौल बनाकर औपनिवेशिक शासन की वैधता को कमज़ोर किया गया (एकरमैन और डुवैल, 2000)। गांधी स्वयं मानते थे कि रचनात्मक कार्य मात्र सामाजिक सुधार नहीं, बल्कि अहिंसक संघर्ष का ज़मीन तैयार करने वाला आधार है – "सामाजिक पुनर्निर्माण [रचनात्मक कार्यक्रम] अपने आप में कोई अंतिम लक्ष्य नहीं था; बल्कि यह अहिंसक कार्रवाई की आधारभूमि था।" (एकरमैन और डुवैल, 2000)। इस तरह, रचनात्मक कार्यक्रम और राजनीतिक संघर्ष अभिन्न रूप से जुड़ गए।

रचनात्मक राजनीति के उदय का एक और प्रमुख प्रभाव था – इसने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत की दिशा तय की। गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम एक तरह से "संपूर्ण स्वराज के निर्माण की पूर्वपीठिका" था (गांधी, 1945)। उन्होंने आज़ादी मिलने के बाद ग्राम स्वराज, पंचायती राज, स्वरोजगार, ग्रामीण उद्योग, नैतिक शिक्षा आदि जिस दृष्टि की कल्पना की थी, वह उनके रचनात्मक कार्यक्रमों में प्रतिफलित थी। यद्यपि 1947 में राजनीतिक स्वतंत्रता मिल गई, गांधी चाहते थे कि नवभारत इन रचनात्मक तत्वों को अपनी शासन-व्यवस्था का हिस्सा बनाये रखे (परेल, 2006)। यह एक विडंबना रही कि स्वतंत्रता के बाद गांधी की हत्या हो गई और सरकार ने तेज़ औद्योगीकरण व केंद्रीकृत राज्य-व्यवस्था का मार्ग अपनाया, जिससे गांधी के ग्राम-केन्द्रित स्वराज का स्वप्न पूर्णतः साकार नहीं हो सका। फिर भी, गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की विरासत जिंदा रही – विनोबा भावे का **भूदान आंदोलन** (1950 के दशक) वस्तुतः गांधी के रचनात्मक कार्यों (भूमि-सुधार, ग्राम सुधार) की कड़ी था, जिसे लाखों लोगों का समर्थन मिला (जैन, 2010)। इसी प्रकार, सहकारी आंदोलन, खादी ग्रामोद्योग विभाग, पंचायत राज का संवैधानिक संस्थाकरण आदि गांधीवादी कार्यक्रमों से प्रभावित थे। इस दृष्टि से, गांधी द्वारा औपनिवेशिक युग में प्रवर्तित रचनात्मक राजनीति ने स्वतंत्रता उपरांत भारत के सामाजिक-आर्थिक नीतियों को भी प्रेरणा दी।

आलोचनात्मक रूप से देखें तो गांधी के जीवनकाल में कुछ राष्ट्रवादी नेताओं ने रचनात्मक कार्यक्रमों की गति व प्रभाव पर प्रश्न उठाए थे। खासकर युवा समाजवादियों व क्रांतिकारियों को लगता था कि सिर्फ चरखा काटने या गाँव सुधार से अंग्रेज़ों से आज़ादी पाना असंभव है – उन्हें निरंतर "आक्रामक सीधी कार्यवाही" की अपेक्षा थी (चंद्रा, 2008)। 1930 के दशक में नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं में तेज़ औद्योगीकरण व केन्द्रीय योजना के प्रति आकर्षण था, जो गांधी के ग्रामोद्योग आधारित अर्थतंत्र से भिन्न था (नेहरु, 1941)। बोस ने तो 1938-39 में गांधी से मतभेद के चलते कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ा और अलग फॉरवर्ड ब्लॉक बना लिया, जिसका एक कारण गांधी की कथित धीमी नीति भी थी। परंतु इतिहास साक्षी है कि भारत की स्वतंत्रता का जो महासमर था, उसमें गांधी की रचनात्मक राजनीति के बिना जनांदोलन टिक नहीं पाता। जहां बोस का रास्ता आज़ादी के लिए बाहरी मदद व सैन्य अभियान का था, गांधी का रास्ता जन-शक्ति को जागृत करने का था – और अंततः जन-शक्ति ने ही अंग्रेज़ी शासन की नींव हिला दी। ब्रिटिश शासकों ने खुद स्वीकारा था कि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के बाद और द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में उन्हें एहसास हो गया था कि अब भारत में राज करना नैतिक व व्यावहारिक रूप से असंभव होता जा रहा है (एटनबरो, 1983)। यह नैतिक दबाव केवल कुछ महीनों के आंदोलन का परिणाम नहीं था, बल्कि दशकों से चल रही उस शांति-क्रांति (रचनात्मक कार्य) का परिणाम भी था जिसने भारतीय जनमानस को आज़ादी के लिए एकजुट कर दिया था।

6. निष्कर्ष : महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति के उदय को संभव किया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक अद्वितीय चरित्र प्रदान किया। इस ऐतिहासिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधी का दृष्टिकोण स्वतंत्रता आंदोलन को सिर्फ सत्ता से मुक्ति का संघर्ष नहीं, बल्कि राष्ट्र के नव-निर्माण का अभियान बनाना था। अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए गांधी ने भारत की जनता को स्वतंत्रता की प्रक्रिया में सहभागी बनाया और आंदोलन को समाज के हर तबके तक पहुंचाया। इन कार्यक्रमों ने सामाजिक सुधार, आर्थिक स्वावलंबन और राष्ट्रीय एकीकरण जैसे उद्देश्यों को प्रत्यक्ष राजनीति से जोड़ा और एक समग्र जनआंदोलन को जन्म दिया (मैथ्यू, 2021)। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों के फलस्वरूप स्वतंत्रता पूर्व भारत में रचनात्मक राजनीति की जड़ें जम गईं – एक ऐसी राजनीति जो रचनात्मक कार्यों द्वारा समाज में शक्ति संतुलन बदलने की कूवत रखती थी। यह राजनीति नकारात्मक रूप से विध्वंसक होने के बजाय सकारात्मक रूप से सर्जनात्मक थी: चरखे की घर्र-घर्र ध्वनि ने बंदूक की गर्जना से ज़्यादा गहरा असर छोड़ा, स्कूलों-आश्रमों में हुआ नवनिर्माण ब्रिटिश हुकूमत के लिए उतना ही ख़तरनाक साबित हुआ जितना सविनय अवज्ञा (चंद्रा, 2008)। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम इस मायने में सफल रहे कि उन्होंने भारत की आज़ादी की बुनियाद जनता के आत्मबल पर रखी। इन कार्यक्रमों ने भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद भी एक मार्गदर्शक दर्शन दिया – लोक-केन्द्रित विकास, ग्राम स्वराज, नैतिक राजनीति जैसे सिद्धांत गांधी की विरासत के तौर पर जीवित रहे। अंततः, औपनिवेशिक भारत में रचनात्मक राजनीति का उदय गांधी की उस क्रांतिकारी समझ का प्रमाण था कि "क्रांति सिर्फ सत्ता पलटने से नहीं, जनता की चेतना जागृत करने से आती है" (देसाई, 2011)। महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों ने इस चेतना को जगाकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक ऐसा गहन आयाम दिया, जिसकी गूंज इतिहास में अद्वितीय है। यह अध्ययन दर्शाता है कि गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम भारतीय स्वतंत्रता की गाथा में उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने उनके प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन, क्योंकि इन्हीं के कारण आज़ादी का संघर्ष ज़मीन से जुड़ा, सर्वव्यापी और स्थायी बन पाया (शर्मा, 2022; मैथ्यू, 2021)। गांधी द्वारा बोया गया रचनात्मक राजनीति का बीज भविष्य में भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा, जब-जब सामाजिक पुनर्निर्माण एवं जनभागीदारी की बात आएगी।

संदर्भ सूची :

1. ऐकरमैन, पीटर, एवं जैक डूवाल। ए फ़ोर्स मोर पावरफ़ुल: ए सेंचुरी ऑफ़ नॉनवायलेंट कॉन्फ़्लिक्ट। पालग्रेव, 2000।

2. बॉन्ड्यूरेंट, जोन वी. कॉनक्वेस्ट ऑफ़ वायलेंस: द गांधियन फ़िलॉसफ़ी ऑफ़ कॉन्फ़्लिक्ट। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1965।
3. बरोव्स, रॉबर्ट। द स्ट्रैटेजी ऑफ़ नॉनवायलेंट डिफ़ेन्स: ए गांधियन अप्रोच। एस.यू.एन.वाई. प्रेस, 1995।
4. चंद्र, बिपिन। इंडियन नेशनल मूवमेंट: द लॉन्ग-टर्म डायनेमिक्स। हर-आनंद पब्लिकेशन्स, 2008।
5. देसाई, नारायण। "गांधीजी की क्रांतिकारी रचनात्मकता।" सर्वोदय जगत, सितम्बर 2011।
6. गांधी, मोहनदास करमचंद। हिंद स्वराज अथवा इंडियन होम-रुल। 1909।
7. गांधी, मोहनदास करमचंद। यंग इंडिया, 12 जनवरी 1922 ("ऑलरेडी फ़्री")। महात्मा गांधी के संकलित ग्रंथ, खंड 22, पृ. 160।
8. गांधी, मोहनदास करमचंद। "आश्रम के लड़कों और लड़कियों के नाम पत्र।" 21 मार्च 1932। संकलित ग्रंथ, खंड 49, पृ. 220।
9. गांधी, मोहनदास करमचंद। रचनात्मक कार्यक्रम: उसका अर्थ और स्थान। नवजीवन पब्लिशिंग, 1945।
10. गुहा, रामचंद्र। गांधी: वे वर्ष जिन्होंने दुनिया को बदल दिया (1914–1948)। पेंगुइन, 2018।
11. मैथ्यू, बिंदु। "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम: गांधी की अप्रत्यक्ष राजनीति का एक रूप।" शोधकोष: जर्नल ऑफ़ विज़ुअल एंड परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स, खंड 2, अंक 2, 2021, पृ. 38–45।
12. नंदा, बी. आर. गांधी और उनके आलोचक। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985।
13. नेहरू, जवाहरलाल। द यूनिटी ऑफ़ इंडिया: संकलित लेखन (1937–40)। जॉन डे, 1941।
14. राव, राजा। कंथापुरा। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1938।
15. शर्मा, पूजा। "वर्तमान में गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता।" महात्मा गांधी: समसामयिक प्रासंगिकता, संपादक—सोशल रिसर्च फ़ाउंडेशन, 2022, पृ. 45–53।
16. शीहन, जोआन। "गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम: पुराने समाज के भीतर नए समाज की रचना।" सत्याग्रह फ़ाउंडेशन (वेब), 12 अगस्त 2014।
17. सिंह, मनोज कुमार। "भारत के मुक्ति संग्राम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, खंड 10, अंक 5, 2022, पृ. 810–815।

•